।। संचत को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ संचत को अंग लिखंते ||

|| रेखता ||

रमता राम सब माय ज्युँ अेक हे || आत्मा ब्होत बिस्तार होई ||
ऊंच अर नीच जो करम बिस्तार हे || प्राण के संग सुख दु:ख दोई ||
ब्रम्ह की दिष्ट सो द्रब ज्यूं जाणीये || भेद बिध सिष सो राछ किया ||
घाट ज्युँ बाद तां माँय फळ ऊपजे || करण करतूत सोई फळ लिया ||
बेर नही भाव सो ब्रम्ह के हेत रे || तारबो मारबो नही कोई ||
खेत क्रसाण के भाग सूं नीपजे || उधम बिस्तार ब्हो भाँत होई ||
नीर अर नाज ज्यूँ राम क्रतार हे || ब्रछ की छाँय सुख भेद देवे ||
दास सुखराम कहे धरम अर करम रे । नरक अर मोख नर धाय लेवे ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,सुख देनेवाला व दु:ख हरण करनेवाला राम सभी आत्माओमे तो एक सरीखा ओतप्रोत है उसके हर आत्मा मे रटने मे कोई कसर नही मतलब किसी आत्मा मे कम है या किसी आत्मामे जादा ऐसा नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि आत्मा एक नही है,अनगिणत है इसलिए आत्माओको विस्तार बहुत बडा है । उन आत्माओमे कोई उंच आत्मा है याने मायाके सुखोसे भरपुर है तो कोई निच आत्मा है याने कालके दु:खोसे भरपुर है । ऐसे अनंत आत्माओका विस्तार है । सतस्वरुप ब्रम्हज्ञान दृष्टीसे समजीए जैसे द्रव्य याने सोना होता है । उससे उस सोने की अलग अलग शरीरपे पहननेकी वस्तु बनती है व उस वस्तुकी अलग अलग किमत होती है ऐसे ये आत्मा ब्रम्हस्वरुप थी परन्तु माया के कर्मो के कारण कम जादा सुख दु:खवाली बनी है । जैसे धातु से अनेक वस्तु बनती है वह हर वस्तु की किमत उसके फल अनुरुप रहती है ऐसे ही ये सभी आत्मा निर्मल जीवब्रम्ह थी वहाँसे वह सुख की आशा से निकली उन आत्माओका यह भारी विस्तार है । सतस्वरुप ब्रम्ह को किसी से बैर नही है किसीसे भाव कुभाव नही है या किसीसे हेत याने प्रित नही है । वह किसीको तारता नही या किसीको मारता नही जैसे खेत मे फसल किसानके भाग्य से उगता कोई किसान कम मेहनत करता व कोई किसान भांती भांती से अलग अलग मेहनत करता परन्तु बारीश का पानी व बीज सभी किसान एक जैसा ही डालते उसमे कोई किसान हलका या कोई किसान भारी डालता ऐसा नही होता । ऐसा ही करता राम सभी आत्माओमे एक सरीखा है । कोई कम जादा नही । ये आत्माए त्रिगुणी मायाके न्यारे न्यारे कर्म करते । कोई आत्मा स्वर्गादिक के कर्म करते व कोई आत्मा नर्कादिक के कर्म करते । जो स्वर्गादिक के कर्म करते उन्हे सुख मिलता व जो नर्कादिक के कर्म करते उनपे भारी दु:ख पडते । ऐसे ही वृक्ष की छाया सबपे सरीखी होती । बैसाख के माह मे जो वृक्षके बराबर निचे आएगा तो उसे वृक्ष के छाया का सुख मिलेगा व सुरज की तपन नही

लगेगी व जो जीव वृक्षके निचे न आते वृक्षसे दुर खडा रहेगा उसपे सुरजकी बडी तपन पडेगी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,धरम व करम की इसीप्रकार जीव के साथ प्रगट हुए । जो जीव निच कर्म करके नरक का रास्ता पकडेगा वह नरकीय दु:ख भोगेगा व जो आत्मा मोक्ष की भक्ति करेगा वह मोक्ष के सुख भोगेगा ।।।१।।

गेब की बात अचाण अचुक हे ।। व्हे आगलो अंस आंकुर होई ।।
गाडीयो द्रब नर पावियो पार बिन ।। तुरत बोहो काज नर करे कोई ।।
आगली पाछली आण के प्रगटे ।। जीव ईण हात सें तका किवि ।।
देव पद रिझ अवतार सब बिस्न रे ।। साज कोई ध्रम यां रीत लीवी ।।
रीत आ बिध अेनाण सो देखिये ।। आगली यहाँ अब वहाँ होई ।।
दास सुखराम कहे नाँव आराध में ।। ढील अर ढालमा करो कोई ।।२।।

गेब याने परमात्माकी बात अचाण अचुक है मतलब उसमे जरासा भी कभी भी बदल नही होगा । जो जैसा करेगा वैसा सुख दु:ख पाएगा । उसमे कोई फेर फार नही होगा । किसीमे पुराणा मोक्ष का अंश संचीत है उसमे तुरन्त मोक्ष के सुख मिलेंगे । जिसमे पुराणा मोक्ष का अंश जरासा भी संचित नही है उसमे तुरन्त मोक्ष के सुख प्रगट नही होंगे । परमात्मा अचाण है, अचुक है उसमे कोई कसर नही है । जैसे गडा हुआ धन किसी मनुष्य को प्राप्त हुआ तो वह मनुष्य उसके पास धन होनेके कारण तुरन्त अनेक काम कर लेगा परन्तु जिसे गडा हुवा धन मिला ही नही तो वह मनुष्य एक भी काम नही कर पाएगा । जीवने अपने हाथो से जो कुछ किया होगा वे पिछे के ,आगेके सभी आकर प्रगट हो जाते । मनुष्य ही अपनी करणी करके देव पदवी पाते है और अच्छी करणी से ही अवतार होते है,और अच्छी करणी से ही रीझ याने इनाम पाते है । मनुष्य देह से अच्छी करणी करके ही विष्णु होते है । कोई धर्म की स्थापना करके उस धर्म की रीती के प्रमाण से फल लेते है । उसकी रीती,विधी और निशान दिखाई देता है । वह देख लो कि पहले किए हुए कर्मो के फल यहाँ अब मिलते है और अब यहाँ जो करोगे उसका वहाँ(जहाँ जावोगे)मिलेगा । इसीप्रकार पुराणी मोक्ष की भक्ती संचित होगी तो तुरन्त मोक्ष के सुख मिलेंगे और भक्ती जरासी भी संचित नही होगी तो मोक्ष के सुख जरासे भी नही मिलेंगे । रामजी के घरमे जरासे भी कसर नही रहती । जीव की पुराणी भक्ती संचित होगी तो वह तुरन्त प्रगट होगी । इसप्रकार भक्ती प्रगट होनेमे कोई कसर नही पडती । इसलिए आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि रामनाम की आराधना करने में,कोई ढील ढाल मत करो ।।।२।।

आगले पूर सूं बेग अब प्रगटे ।। अब की आगले जुग माही ।।
होय हुँसियार नर कसर मा राख जो ।। रती जो मुंग नही अेळ जाव ही ।।
खेत मे जाय नर नेक सो काम करे ।। देणगी सेर कहूँ पाव दिया ।।

झाड झटकाय सब खेत सुळ जावियो ।। मुजरे दाम सो दाम लिया ।।
चाकरी करत कौ बरस चड जात हे ।। अेक कौ मास का मास लेवे ।।
आवती साल सब भूप चूकावसी ।। सब को दाम सो दाम देवे ।।
खून बे-चाकरी पाडसी बिचमे ।। दिन को दिन नही पलक छाणे ।।
दास सुखराम कहे रटे निज नांव रे ।। राम महाराज सो सरब जाणे ।।३।।

जैसे पहले की बारीष होकर के बाढ आ गयी रहती । तो बाद में थोडे से पानी से भी जल्दी ही बाढ आ जाती है । तो अभी का आया हुआ पानी,बहुत सा जमीन मे ही जाता है । इसलिए बाढ कम आती है । यदी पहले की बाढ आयी नही रही,तो अब बाढ आयी है । इससे आगे तो दूसरी खेप मे थोडासा पानी भी आया,तो बाढ आ जायेगी ।(इसी तरहसे पहले के कर्म संचित रहे,तो इस जन्म में थोडे से ही भक्ती प्रगट हो जायेगी । परन्तु पहले के अच्छे कर्म संचित नही रहने से,इस जन्म मे तो करो । जिससे आगे जल्दी ही भक्ती प्रगट हो जायेगी ।) इसलिए सभी मनुष्य होशियार होकर,(भक्ती करने में)कोई कसर मत रखो ।(अच्छे कर्म करोगे,तो अगले जन्म मे तो फायदा होगा ।)तुम्हारे किए एक रत्ती भर या मूंग के दाना इतना भी,बेकार नही जायेगा । (कोई भी मजदूर)मनुष्य,(किसी के भी) खेत मे जाकर,थोडासा काम करेगा,तो किसान उस मजदूरको उसका काम देखकर,सेर या आधा सेर,उसी दिन की,उसी दिन दे देता है ।(और कोई मजदूर)सभी खेत का माल इकठ्ठा करके,झाड झटककर,सारे खेत का माल साफ कर देता है । तो उसे उसकी मजदूरी प्रतिदिन न देकर,उसकी सारी मजदूरीके बदले में पैसे-पैसे दाम उसे अन्तमे देगा । इसलिए उसने(थोडा सा काम करने वाले को,उसी दिन सेर या पाव सेर मजदूरी दिया गया देखकर,हमेशा काम करने वाले मे ऐसा मत देखे,की इसे तो आज के आज दे दिए और मुझे कुछ दिया नही । ऐसा मत समझे । जो खेत का माल पूरा इकठ्ठा करने का काम करेगा । उसे इकठ्ठा ही मिल जायेगा । इसी तरह से थोडीसी भक्ती करनेवाले को,तुरन्त कुछ ना कुछ फायदा मिल जाता है । उसे तुरन्त फायदा मिला हुआ देखकर,हमेशा भक्ती करनेवालों को उदास नही होना चाहिए । की इसे तो जल्दी फायदा हो गया । और मुझे हुआ नही । जैसे सारे खेत का इकठ्ठा करने वाले को प्रतिदिन न मिलकर, इकठ्ठे मिलता है । उसी तरहसे भक्ती करनेवाले को भी,उसकी भक्ती संचित हुयी रहती,उसे इकठ्ठा ही बदला आगे मिल जायेगा ।)जैसे कोई किसी की(धनी की)चाकरी करते-करते, सालभर की नौकरी मालक के यहाँ जमा हो जाती है ।(नौकरी चढ जाती है ।)और नौकर अपनी महीने का महीने नौकरी के पैसे ले लेता है । साल पूरा हो जाने पर,राजा उसके रूपये हिसाब से चुकायेगा ।(सभी पैसे पैसे चुका देगा ।)(सालभर नौकरी करनेवाले को इकठ्ठे रूपये मिला हुआ देखकर,महीने की महीने पगार लेनेवाला कहेगा,की इसे तो इतने रूपये मिले,मुझे कुछ भी रूपये नही

मिले,ऐसा कहेगा । तो अरे,तूने तो उपर के उपर ही रूपये उठा लिए । तेरा शेष तो कुछ रहा नही । इसलिए अब तुम्हें कैसे मिलेगा? इसी तरह से जिसने सकाम भक्ती करके,(कामना के लिए भक्ती करके),फल पहले ही मांग लिए । उसे आगे मोक्ष कहाँ से मिलेगा? मोक्ष तो जिसने निष्काम भक्ती करके,पहले कुछ भी मांगा नही,उसी को मिलेगा । जिसने फल मिलने के लिए भक्ती की,और फल मांग लिए,उसका शेष कुछ भी नही रहा और वह(सकाम भक्ती करने वाला)मोक्ष चाहेगा । तो उसे मोक्ष कैसे मिलेगा?)और कोई चाकरी करने मे कोई कुछ गुनाह करेगा या चाकरी किए बिना दिन खाली जाने देगा । तो उस मालक से कुछ भी छुपा हुआ नही है । दिन के दिन और पलभर भी उससे छुपा नही रहता है ।(उसकी वहाँ सारी हाजीरी बराबर लिखी गयी है ।)सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि कोई इस निज नाम की रटन करेगा,तो उसके राम नाम की रटन करने को,रामजी महाराज सभी जानते है ।।३।।

साखी ।।

सुखिया बाय असाड की ।। चाम सोवनी जाय ।।
जो बेठा हळ छोडके ।। वे काती मे पिस्ताय ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,आषाढ महिने मे जो किसान अपने खेत मे बीज बोता नही उसके सोने सरीखे दिन व्यर्थ जा रहे है ।।।१।।

कातीमे सुखरामजी ।। खुसी हुवे नर लोय ।।
जेट असाडां दोडीया ।। जाँ का अे फल जोय ।।२।।

ऐसे किसान जो हल छोड्के बेकार की बाते करने मे बैठे रहते वे काती महिने मे पछ्तावा करते व महादु:खी होते उनमे से कुछ किसान काती महिने मे बहुत खुश होते जो जेठ व आषाढ महिनो मे दौड दौड्के खेती करता उन्हें यह फल लगता ।।।२।।

आगे कुछ कियो नही ।। अब कुछ कियो न जाय ।।
ओ तोटो सुखराम केहे ।। आगो लग घर मांय ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,आषाढ मे कुछ किया नही व अब करना चाहता परन्तु समय निकल जाने कारण होता नही इसप्रकार तोटा पिछेके पिछे लगा रहता ।।।४।।

करणी क्र सण जिमतां ।। जे कसर रे जाय ।।
तो भुँचे सुखराम के ।। ज्याँ त्याँ आगे आय ।।४।।

जैसे करनी करनेमे याने खेती की निराई–गुडाई करने मे कोई कसर रखेगा वह उसे आगे आगे आके तकलिफ देगी या खाने मे कोई कसर रखेगा याने आधा भोजन करेगा उसे तुरन्त भुक लगेगी और वह भुक उसे दिनभर सताएगी । इसी प्रकार मोक्ष की भक्ति करने मे कसर रखी तो आगे मोक्ष को पोहचने मे बिना काम की ठहरती ।।।४।।

सुखिया नर तन पाय के ।। भजो न सिरजण हार ।।

पिस्तावेगो प्राणीया || अंत काळ कीबार ||५||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जिन्हें मनुष्य शरीर मिला है और सिरजनहार परमात्मा का याने मनुष्य देह देनेवाले कर्ता का भजन किया नही वे सभी प्राणी अंतकालमे पछ्ताऐंगे । जिन्होने जिन्होने मनुष्य देह मे कर्ता का याने रमते राम का याने हर का स्मरण किया नही वे सभी मृत्युलोक मे के सभी आत्मा व देवलोक मे के सभी देव आत्मा हर की भक्ति करना भुलने पे सभी पछ्ताऐंगे ।।।५।।

मरत लोक मे मानवी || देव लोक मे देव ||
सुखिया सब पिस्तावसी || भूला हर की सेव ||६||

जीव ने इस हाथ से पहले जो किया उनको देव पदवी,रामचंद्र समान अवतार की पदवी,विष्णू की पदवी पिछे धर्म साध के अभी मिली है यह सभी को दिख रहा है । इनके समान रामनाम जो साधेगा उसे उच्च कोटीकी मोक्ष की पदवी मिलेगी । इसकी रीत भी ऐसी है । रीत की निशाणी इसीप्रकार की समज लो मतलब पहले किया हुवा नामस्मरण अभी मिल जायेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले इसलिए रामनाम स्मरण करने मे कोई भी जरा भी ढील ढाल मत करो । जैसे नदीको पुर आता है । इस नदी को पहले पुर आया होगा तो अब जरासे बारीश से पुर आ जाएगा । नदि को पहले पुर नही आया हो तो अभी जो बारीश होगी वह बारीश से आया हुआ पानी से पुर न आते जमीन मे मुर जाएगा । इसी तरह अगली भक्ति होगी तो इस जन्म मे जरासा भी भजन करोगे तो वह भजन देहमे प्रगट हो जाएगा परन्तु अगली भक्ति नही होगी तो इस जन्म का भजन अगले जन्म मे प्रगट होगा । इसलिए होशियार होकर जरासी भी कसर न रखते स्मरण करो ।।।६।।

|| इति संचत को अंग संपूरण ||